डॉ० ओमप्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज आरा

विषय-संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा) Date 16/7/20

तृतीय वर्ष, ~~छठी~~ पंचम पत्र

वैदिक साहित्य का इतिहास

ऋग्वेद का रचनाकाल

ऋग्वेद के रचनाकाल के विषय में कुछ निश्चित मत प्रकट करना सर्वथा असंभव है। जहाँ एक ओर भारतीय विद्वान वेदों को अपौरुषेय मानते हैं और उनका समय सृष्टि का प्रारम्भ- लाखों वर्ष-पूर्व मानते हैं, वहीं दूसरी ओर पाश्चात्य विद्वान उन्हें ऐतिहासिक ग्रन्थ मानते हुए उनका समय ईसवीय सन् के प्रारम्भ के अति समीप लाना चाहते हैं। यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित प्रतीत होता है कि वेदों के रचनाकाल के विषय में जितने मत प्रस्तुत किए गए हैं, वे सभी शत-प्रतिशत आनुमानिक और काल्पनिक हैं। सहस्रों वर्षों के अन्तर को पुष्ट प्रमाणों के बिना समन्वित करना अत्यन्त असंभव है।

पूर्व सीमा - इसका कोई अन्त नहीं है।

अपर सीमा - महावीर और गौतम बुद्ध ने वैदिक कर्मकाण्ड में पशु बलि विषय को लेकर उसका खण्डन किया है। इससे यह सिद्ध होता है कि वैदिक साहित्य का अन्तिम अंग सूत्र साहित्य, मुख्यतया कर्मकाण्ड के प्रतिपादक श्रौत और गृह्य सूत्र उनसे पूर्व विद्यमान था। इसके आधार पर महावीर और बुद्ध से पूर्व 600 ई० पूर्व के लगभग वैदिक साहित्य की अपर सीमा मानी जाती है। 1907 ई० में एशिया माइनर के बोगाजकोई (Boghaz Koi) स्थान से एक सन्धि पत्र शिलालेख प्राप्त हुआ है, जो

1400 ई० पू० के प्रारम्भ में मितानी (Mitanni) और हिटाइट (Hittite) लोगों के बीच हुई थी। जिसमें दोनों जातियों के निजी देवों के साथ ही साक्षी रूपमें मित्र, वरुण, इन्द्र और नासत्यौ देवों का उल्लेख है। इन देवों को वैदिक देवता मानते हुए सिद्ध किया जाता है कि वैदिक साहित्य की मुख्यतया मूल चारों वेदों की, रचना 1400 ई० पू० से पूर्व हो चुकी थी।

विभिन्न मत- इस विषय में प्राप्त मुख्य मत ये हैं-

(1) स्वामी दयानन्द सरस्वती (आधार-वेदमन्त्र) सृष्टि के प्रारम्भ से।
(2) दीनानाथ शास्त्री चुलेट (ज्योतिष) अब से 6 लाख वर्ष पूर्व।
(3) रघुनन्दन शर्मा (ज्योतिष) अब से 88 हजार वर्ष पूर्व।
(4) अविनाशचन्द्र दास (भूगर्भ) 25 हजार वर्ष ई० पू०।
(5) नारायण भवनराव पवगी (भूगर्भ, ज्योतिष) 7 हजार वर्ष ई० पू०।
(6) बालगंगाधर तिलक (ज्योतिष) 6 हजार ई० पू०।
(7) शंकर बालकृष्ण दीक्षित (ज्योतिष) 3500 ई० पू०।
(8) याकोबी (ज्योतिष) 4500 ई० पू० - 2500 ई० पू०।
(9) विण्टरनित्स (मितानी, शिलालेख) 2500 ई० पू०।
(10) मैक्समूलर (बौद्ध साहित्य) 1200 ई० पू०।

उक्त मुख्य मतों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है-

(1) स्वामी दयानन्द सरस्वती

इन्होंने वेदमन्त्रों से प्रदर्शित किया है कि वेदों का आविर्भाव परमात्मा से हुआ है।-

Scanned with CamScanner

तस्मात् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। ऋग्० १०।९०।९, अथर्व० १९।६।१३, शुक्लयजु० ३१।७, तै०आ० ३।१२।५।

② अविनाशचन्द्र दास

इन्होंने ऋग्वेद में प्राप्त भूगोल एवं भूगर्भ सम्बन्धी अन्तःसाक्ष्य के आधार पर ऋग्वेद का रचनाकाल २५ हजार वर्ष ई०पू० माना है। 'एका चेतत् सरस्वती नदीनाम्०' (ऋ० ७-९५-२) आदि में वर्णन है कि सरस्वती नदी समुद्र में मिलती है। यह समुद्र राजस्थान में था। अब सरस्वती और राजस्थान के समुद्र का लोप हो गया है। यह घटना २५ हजार ई०पू० से पूर्व की है। उस समय दोनों की सत्ता थी। अतः ऋग्वेद इससे पहले बना था।

Scanned with CamScanner